Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016:67-68 **ISSN 2348-0084 (P)**
ISSN 2455-2127 (O)

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की विशेषतायें

शिव प्रकाश सिंह[1]
[1]शिव प्रसाद पाण्डेय इण्टर कालेज पड़री कला उन्नाव, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन विश्वक्रांतियों एवम आन्दोलनों से भिन्न एक मानवीय संवेदनाओं एवम मानवीय मूल्यों पर आधारित दुनियां के लिए शांति एवम अहिंसा के माध्यम से परिवर्तन का एक संदेश सिद्ध हुआ है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव नवजागरण में निहित थी। नवजागरण ने सर्वप्रथम बुद्धिजीवियों में जागृति पैदा की जिसका हमारे साहित्य शिक्षा और कला पर विशेष प्रभाव पड़ा। फिर इसने एक नैतिक शक्ति बनकर भारतीय समाज व धर्म में सुधार लाने का काम किया। बाद में नवजागरण ने आर्थिक क्षेत्रों में आमूल चूल परिवर्तन करके देश को राजनीतिक स्वतंत्रता उपलब्ध करायी। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय राष्टीय आन्दोलन की प्रकृति को समझने तथा इसकी प्रवृत्ति को अन्य विश्व क्रांतियों से अलग करने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS: *भारत, राष्ट्रीय आन्दोलन, अहिंसा, नवजागरण,*

भारत का नवजागरण यूरोपीय जागरण से कई मायनों में भिन्न था। यूरोप में नवजागरण का कार्य कला साहित्य और ज्ञान को पुर्नजागृत करना था। जबकि भारत के नवजागरण ने प्राचीन भारत को फिरसे जागृत करने का कार्य नहीं किया। अपितु यहां नवजागरण ने भारतीय आत्मा की उसकी गहराई तक पहुंचकर प्रभावित किया। इसी के प्रभाव से देश में धर्म व समाज सुधार की लहरे उठने लगीं। धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में कान्तिकारी परिवर्तन होने लगे तथा शिक्षा, साहित्य कला और विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति का स्रोत जुड़ गया। नवजागरण में धर्म और सुधार आन्दोलनों ने भारतीयों में राष्टीयता तथा स्वतंत्रता की भावना का संचार किया।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास 19वीं शताब्दी अर्थात विश्व की विभिन्न महत्वपूर्ण क्रांतियों के प्श्चात हुआ। इसके बावजूद भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन उनका निर्णायक अनुकरण या अनुसरण नहीं किया। यह भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की मौलिकता का द्योतक है। हमारे आन्दोलनकारियों ने अपनी समस्याओं को अपनी आजादी की अपने रीति रिवाज एवम मर्यादाओं से लड़ा। यही कारण अनुकरणीय एवम लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत सिद्ध हो रही है ।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवम विश्वक्रान्तियों पर व्यापक दृष्टिपात करने से कुछ विन्दु भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के ऐसे प्रतीत होते है। जो मानवता एवम मानवीय मूल्यों को बल प्रदान करता है जो निम्न हैं।

- **शान्तिपूर्ण एवम अहिंसात्मक आन्दोलन** भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एक विशाल भूखण्ड पर लड़ा गया एक बड़ा आन्दोलन था लेकिन इतिहास इसका साक्षी है कि यह आन्दोलन अहिंसात्मक ही रहा। आन्दोलनकारियों के उपर घोर अत्याचार हुए लेकिन उससे निपटने का तरीका शान्ति और अहिंसा ही रहा।
- **राजनैतिक के साथ समाज सुधार भी** 19वीं शताव्दी में जो सामाजिक धार्मिक सुधार हुए उनका प्रभाव राष्ट्रीय आन्दोलन पर भी पड़ा। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द आदि महान सुधारकों ने भारतीयों के हृदय में देशभक्ति एवम स्वतंत्रता का इतना भाव भर दिया कि लोग स्वतंत्रता की बात सोचने लगे। राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा, बालविवाह और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य स्वदेशी और स्वभाषा पर बल दिया। स्वामी विवेकानन्द ने देशप्रेम एवम् देशभक्ति की प्रेरणा दी। स्वयं स्वामी विवेकानन्द के शव्दों में 'हमारे देश को आज ऐसे महापुरूषों की आवश्यकता है जिनका शरीर लोहे का हो और जिनकी इच्छाशक्ति इतनी बलवती हो कि जिसका प्रतिरोध न किया जा सके।' श्रीमती एनी बेसेन्ट के शव्दों में 'स्वतंत्र व्यक्ति ही स्वतंत्र देश का निर्माण कर सकते हैं। इस प्रकार19 वीं शताव्दी में ब्रहम समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, तथा अन्य समाज सुधारक संस्थाओं ने भारतीय राष्ट्रीय जागरण एवम् उनका मानव समाज पर व्यापक प्रभाव डाला। जो अन्य विश्वक्रान्तियों से सर्वथा भिन्न है।
- **नैतिक मूल्यों की राजनीति में स्थापना** राष्ट्रीय आन्दोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता परिलक्षित होती है कि नैतिक मूल्यों को राजनीति में प्रतिस्थापित किया गया। इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि साध्य पवित्र होने के साथ साधनों की भी पवित्रता पर व्यापक बल दिया गया। है।
- **यह क्षैतिज था लम्बवत नहीं** भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन विस्तार पर बल दिया केवल शव्दाडंबर के

1: Corresponding Author

माध्यम से यह कभी लम्बवत होने का प्रयास नहीं किया।

- **परतंत्रता के विरूद्ध स्वतंत्रता किन्तु अहिंसात्मक** भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन आन्तरिक नहीं किन्तु बाहय शक्तियों के विरूद्ध स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन था। इसके बावजूद इसका अहिंसात्मक होना बड़ी बात थी। जो मानव समाज के लिए प्रेरणाप्रद है।
- **आत्मचेतना राष्ट्रीय स्वाधीनता में परिवर्तित** भारतीय जनमानस की आत्म स्वतंत्रता एवम् आत्मचेतना ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता का रूप धारण कर लिया। जो देखते ही देखते एक विशाल जनान्दोलन का रूप धारण कर लिया। और लोग आजादी के ऐसे दीवाने हुए कि फांसी का फंदा भी हंस कर चूमने लगे।
- **कुरीतियों एवम् कुप्रथाओं पर प्रहार** राष्ट्रीय आन्दोलन की एक विशेष्ता यह भी रही कि इसने समाज में विद्यमान कुरीतियों एवम् कुप्रथाओं पर प्रहार किया। इसके द्वारा समाज को समान व समरस बनाने में बल मिला।
- **आत्मविश्वास का जागरण** राष्ट्रीय आन्दोलन की एक अनोखी विशेषता आत्मविश्वास में बृद्धि की प्रेरणा थी। आत्मविश्वास का उत्साहवर्द्धन करते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोष की उक्तियां ' दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिये तथा तिलक का उद्घोष कि ' स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा ने समाज को आत्मविश्वास से भर दिया।
- **नियति से नीति का निर्माण** यद्यपि राजनीति में नीति को कम स्थान मिलता है लेकिन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन इसका साक्षी है कि स्वच्छ नियति से ही आन्दोलन की नीतियं तय की गयी।
- **आध्यात्मिकता की नीति का अवलंबन** सम्पूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन पर अध्यात्म का आवरण सदैव बना रहा। और हमारे महान आन्दोलन का शक्ति स्रोत भी अध्यात्म ही रहा।

उपरोक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन मानवीय संवेदनाओं को संजोये हुए आत्मविश्वास के धरातल पर खड़ा विश्व समाज को मानवता का एक संदेश था जो आज भी मानव समाज को प्रेरणा एवम् उर्जा प्रदान कर रहा है ।